

लजौरा की बाघिन

संघर्ष

दिल्ली से चलकर एक मलिछ

घाटी वीरन को आया था

भाला ढाला सब जोर लगाकर

वो कुछ भी हाथ न पाया था

दो बाघिन चंडी रूप धरी

पग पग पर रक्षा करती थीं

निज माटी मिट्टी मर्यादा को

उस नीच अधम से लड़ती थीं

नोट- (सतपुड़ा के आस पास की लजौरा घाटी में कान्हन राजा राज्य करते थे। एक तरह से वो देवगिरी साम्राज्य के जागीरदार थे लेकिन उनका गौरव किसी नरेश से कम न था इसलिए हम उनके लिए महाराज शब्द का प्रयोग करेंगे। इसमें दिल्ली से आया मलिछ का तात्पर्य अलाउद्दीन खिलजी से है। हालांकि वह उस समय कड़ा से आया था लेकिन उसका भरण-पोषण दिल्ली से होता था इसलिए ऐसा लिखा गया है)

अर्थ- जब उस आक्रांता ने महाराज कान्हन जी के राज्य पर हमला किया तो मधुलिका और मधुरिमा ने अतुलनीय साहस से महाराज की तरफ से युद्ध किया । दोनों वीर बाघिनों के शौर्य समक्ष अलाउद्दीन खिसिया गया। उसने सब बल लगाया लेकिन उन दोनों वीरांगनाओं का तेज भारी पड़ रहा था

दामिन विद्युत तलवारन से

जब शीश मलिछ वो छिलती थीं

राजा कान्हन की चिंता को

निज शौर्य तेज से हरती थीं

सब मलिछ खड़े हो चकित खड़े

दांतन में उंगली धरती थे

दो हिंदू बाघिन गाथा को

आपस में डर से कहते थे

अर्थ- लड़ाई चल रही थी । दोनों वीरांगनाओं ने मोर्चा संभाल रखा था । महाराज कान्हन टेंशन फ्री थे की कोई बात नहीं जब तक ये दोनों के हाथ में तलवार है तब तक क्या ही फिकर करना। क्योंकि उनके हाथ में तलवार होने का मतलब ही विजय होता था ।।

दोनों मंलिछों की गर्दन उड़ाये जा रही थीं तो मलिछ लोग आपस में ही पूछ रहे थे - कौन हैं? कौन हैं भाई ये दोनों ? जो हम लोगों के आदमीजन को साग मुरई की तरह काट रही है ।

एक से बढ़कर एक मलिछ की गर्दन जमीन पर गिरी जा रही हो तो डर का माहौल बन ही गया था । उधर महाराज कान्हन जी तो टेंशन फ्री थे।

एक शत बिटिया जो ऐसी होतीं

तो हिन्दू जन को कौन हराता

भारत माता के गौरव को

कब नीच मलिछ जन हाथ लगाता

पर दुर्भागो की लीला ने

आपस में इनकी बैर बनाया

गजनी गोरी से भिखमंगों को

एक उज्जवल उत्तम भाग दिलाया

अर्थ- एक बूढ़ा सिपाही दूसरे से कह रहा था कि यदि इन दोनों की तरह एक सौ बिटिया और होतीं तो हम मलिछों का क्या ही हाल होता । इन हिन्दुओं के सौभाग्य सौजन्य को भला कोई नुकसान पहुंचा पाता क्या । पर दुर्भाग्य से इनमें ऐसा हो न सका और ये लोग आपस में ही लड़ते रहते हैं। इनके आपस में लड़ते रहते होने के कारण ही पूर्व में गजनी और गोरी जैसे दरिद्रों ने धन कमाया।

नदियों में जिनके अमृत है

माटी में बसता सोना है

उस गौरव उजली धरती पर

हिंदू आपस में लड़ते हैं

भाई भाई की लाठी से

रंजिश तृष्णा में मरते हैं

जो इनमें एका आ जाता

तो गैर कहां फिर रह पाता

आर्यों की पावन माटी पर

भगवा गौरव ही लहराता

अर्थ- बूढ़ा मलिछ फिर कहता है कि इन हिन्दुओं के नदियों में अमृत है और माटी में सोना बसता है। लेकिन फिर भी ये लोग आपस में लड़ते रहते हैं। आपसी वैमनस्य में भाई भाई पर लाठी चलाता है। यदि इनमें एकता आ जाता तो किसी मलिछ का दाल कहां गल पाता और इस महान धरती पर भगवा लहराता

लजौरा की बाघिन महाकाव्य

Coming soon.....